पुस्तक समीक्षा

अम्लघात से पीड़ित स्त्री-पुरुषों के दर्द को महसूस कराती पुस्तक

समीक्षक: दीपक गिरकर

पुस्तक: **अम्लघात**
(एसिड अटैक की कहानियाँ)
संपादक: **सुधा ओम ढींगरा**

"अम्लघात" कहानी संकलन का संपादन सुपरिचित प्रवासी साहित्यकार, कथाकार सुधा ओम ढींगरा ने किया हैं। सुधा जी के लेखन का सफर बहुत लंबा है। सुधा जी की प्रमुख रचनाओं में "नक्काशीदार केबिनेट" (उपन्यास), "सच कुछ और था", "दस प्रतिनिधि कहानियाँ", "कमरा नंबर 103", "कौन सी जमीन अपनी", "वसूली", "खिड़कियों से झाँकती आँखें" (कहानी संग्रह), सरकती परछाइयाँ, धूप से रूठी चाँदनी, तलाश पहचान की, सफर यादों का (कविता संग्रह), निबंध संग्रह, वैश्विक रचनाकार मूलभूत जिज्ञासाएँ- भाग-1 और दो तथा सार्थक व्यंग्य का यात्री रू प्रेम जनमेजय सहित नौ पुस्तकों का संपादन, साठ से अधिक संग्रहों में भागीदारी शामिल हैं। सुधा जी ने इस संकलन की कहानियों का चयन और संपादन बड़ी कुशलता से किया हैं।

यह "अम्लघात" कहानी संकलन एसिड अटैक के मुद्दे पर जीवन के विभिन्न अनुभवों से परिचय कराते हुए पाठक की अंतरात्मा को झकझोर देता है। कहानीकारों ने उस मानसिकता की गहराई से पड़ताल की है, जिसके चलते समाज में इस तरह की वहशीपन, हिंसक घटनाएँ हो रही हैं। कहानीकारों ने अपने लेखकीय कौशल से एसिड अटैक की घटना से जुड़े हर पहलू को बड़ी बारीकी से इन कहानियों में पिरोया हैं। इस संकलन की कहानियों में जीवन का करुण और हृदयविदारक चित्र मिलता है। कहानियों में यथार्थ है और पीड़िताओं को जीवन की जो अनुभूति हुई है, उसकी यथार्थ अभिव्यक्तिभी हुई है। समाज की शर्मनाक और बड़ी समस्या एसिड अटैक पर लेखिकाओं का हृदय विचलित होता है और इस संकलन की कहानियों में लेखिकाओं की छटपटाहट नजर आती है। इन कहानियों को पढ़ते हुए मन भीगता है। इन कहानियों को पढ़कर बहुत दिनों तक बेचैनी बनी रहती है। अम्लघात के इर्द-गिर्द बुनी इन कहानियों में कहानीकारों ने मानवीय संवेदनाओं को सामने रखा हैं। इन कहानियों में मानव और मानवता के पतन पर चिंता नजर आती है। ये कहानियाँ समाज को आईना दिखाती हैं। इस संग्रह की कहानियाँ हमारी चेतना को झकझोरते हुए नफरत, वहशीपन, बदले की भावना जैसी हिंसक ताकतों का विरोध करते हुए अन्याय के विरुद्ध संघर्ष को प्रेरित करती है। ये कहानियाँ एक व्यापक जागरूकता की विचारोत्तेजक कहानियों का संग्रह है, जिसमें हमारे समय का यथार्थ ध्वनित है। कहानीकारों ने इन कहानियों में पात्रों के मनोविज्ञान को और उनके स्वभाव को अच्छी तरह से निरूपित किया है। जमाना बदल गया है लेकिन पुरुष मानसिकता में कोई बदलाव नहीं आया है। एसिड अटैक एक घिनौना कृत्य है। क्या इस तरह की हिंसा औरत का कद छोटा कर देती है? क्यां एसिड हमले के बाद युवतियाँ जिंदा लाश में तब्दील नहीं हो जाती हैं? इन कहानियों में आक्रोश से भरे पात्रें की पीड़ा के जरिये कथाकारों ने मौजूदा कानून व्यवस्था पर सवाल खड़े किये हैं।

सुधा ओम ढींगरा अपने संपादकीय में लिखती हैं- 'पंकज सुबीर ने आकांक्षा पारे के कहानी संग्रह "पिघली हुई लड़की" की ऑनलाइन समीक्षा करते हुए एसिड अटैक पर कहानी संग्रह निकालने का बीज डाला तो मैंने उसे खाद-पानी देने का जिम्मा उठाया। उस दिन से भीतर उथल- पुथल मची हुई थी। इस पुस्तक का संपादन करते समय मैं बहुत तनाव से गुजरी हूँ, अम्लघात से पीड़ित स्त्री-पुरुषों का दर्द महसूस किया है, जिन लेखकों ने उसे भोगा और कहानियों में चित्रित किया है, उन पर क्या बीती होगी, समझ सकती हूँ।" इस कहानियों के संकलन में 20 कहानियाँ संकलित हैं जो सुपरिचित और प्रसिद्ध कथाकारों उषाकिरण खान, कादम्बरी मेहरा, गीताश्री, आकांक्षा पारे काशिव, रजनी मोरवाल, विकेश निझावन, अरुण अर्णव खरे, ज्योति जैन, आनंद कृष्ण, हर्षबाला शर्मा, रेनू यादव, डॉ. ऋतू भनोट, डॉ. निरूपमा राय, राधेश्याम भारतीय, रोचिका अरूण शर्मा, रेणु बर्मा, प्रबोध कुमार गोविल, पूनम मनु, सत्या शर्मा 'कीर्ति', डॉ. लता अग्रवाल द्वारा लिखी

नक्काशीदार केबिनेट

लेखिका: डॉ. सुधा ओम ढींगरा

डॉ. सुधा ओम ढींगरा का उपन्यास 'नक्काशीदार केबिनेट' पढ़ा। स्त्री अस्मिता पर जैसे सम्वेदनाओं की नक्काशी जड़ दी है। पुस्तक हाथ में लेने के बाद पाठक को पकड़ लेती है। बिना पूरी पढ़े वह उसे रखता नहीं है।

उपन्यास की नायिका एक सशक्त स्त्री है जीवन से मिले अजीब, भयावह संघर्षों, खतरों से भी चूकती नहीं है। अमेरिका और भारत दोनों देशों की संस्कृति का निष्पक्ष व ईमानदार विश्लेषण पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत हुआ है। लेखिका के व्यक्तित्व व कृतित्व की झलक भी पुस्तक में अभिव्यक्त हुई है।

लेखिका स्त्री के कोमल मन की खूबसूरत मनोवैज्ञानिक प्रस्तुति करने में सिद्धहस्त हैं। स्मृतियों के वातायन खुलते, हिलते - डुलते, संभलते रहते हैं। रिश्तों के रिसते नासूर, चोरी के धन का तांडव, प्रेम का परिष्कृत रूप, मित्रता की गरिमा त्याग, मानव की मानवीयता, तन्हाई का दंश, स्त्री शक्ति का संघर्ष, बुराई का अंत, सत्य की विजय, प्रकृति का रोष, लोभ की पराकाष्ठा, मनुष्य की नीचता और उच्चता सभी कुछ खूबसूरत नक्काशी सा जड़ दिया गया है उपन्यास में। सहज सरल भाषा में लिखा नक्काशीदार केबिनेट उपन्यास वास्तव में बेजोड़ कृति है। उग्रवाद, देहव्यापार, आतंकवाद, धर्म के नाम पर कत्लेआम, सब कुछ अभिव्यक्त हुआ है। अतीत और वर्तमान का तुलनात्मक अध्ययन करती हुई लेखिका अपनी नायिका के सुखद, सशक्त अनुकरणीय व्यक्तित्व के साथ कलम को विराम देती हैं।

प्रकृति और इंसानों के ही नहीं जीवों के जीवन में भी आए चक्रवात की गाथा है नक्काशीदार केबिनेट। चक्रवात के समय मेरे घर में पानी है आप नहा सकते हैं, पानी ले जा सकते हैं। मेरे पास बहुत बड़ा घर है, छत है आप आकर रह सकते हैं, पढ़कर मानवीयता से रूबरू होते हैं तो चोरी की घटनाएँ मनुष्य की नीचता का उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। हेलीकॉप्टर से पुलिस का पहुँचना अमेरिकी प्रशासन का मुस्तैद होना दर्शाता है। नायिका को अपने ही देश में सगे लोगों द्वारा ठगे जाना परदेश में अजनबी विदेशी दम्पत्ति का स्नेह सहयोग सिद्ध करता है अच्छे लोग बुरे लोग कहीं भी किसी भी जाति देश धर्म में हो सकते हैं और भी बहुत कुछ पठनीय सराहनीय है उपन्यास में जिसे पढ़कर ही महसूस किया जा सकता है।

खूबसूरत उम्दा कृति के लिए लेखिका को साधुवाद।

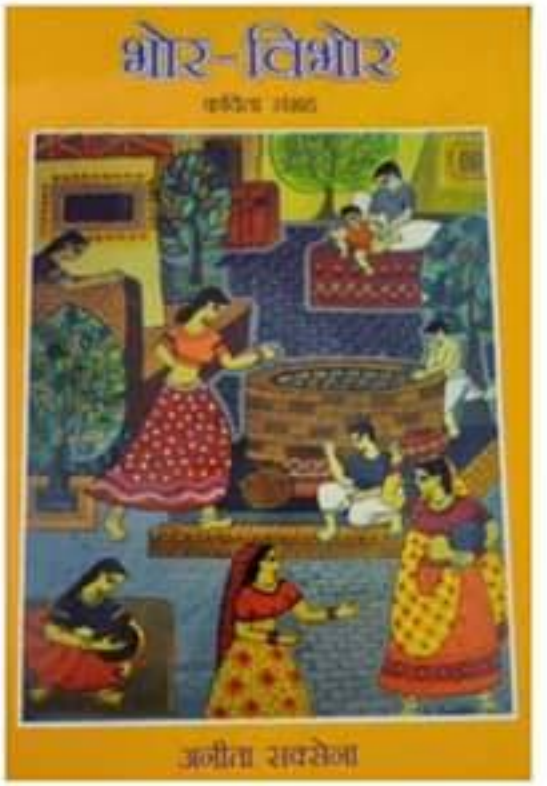

भोर विभोर

लेखिका: अनिता सक्सेना

'भोर विभोर' अनिता सक्सेना जी का अनुभवों, सुखों दुखों की भावभूमि पर रचा रचना संसार है। जीवन को भोर के रूप में आत्मसात करने वाली रचनाकार की रचनाएँ वास्तव में भाव विभोर करती हैं, उनकी रचनाओं में ऊर्जा, उमंग, मानवीयता है।

जीवन जीने की कला है। रचनाकार की सरल, सौम्य, मधुर छवि रचनाओं ने भी आत्मसात कर ली है। देखिए -

फूल हर श्रृंगार के
तेरे मेरे प्यार के

दूसरी बानगी देखिए -

मेघों की आहट पर
धरती ने चौखट पर
अक्षत कलश भर
दीप जलाए
यादों के मैंने तेरे सपने संजोए

रचनाकार ने मन की कोमल सूक्ष्म भावनाओं, यादों को पन्नो पर उकेरा है,